गाँधीवादी भारतीय युग आंदोलन और महिलाओं की भागीदारी

रीना कुमारी
इतिहास, पीएच0 डी0, शोधार्थी
कलिंगा विष्वविद्यालय, रायपुर।

सारांष :–

भारत में वैदिक काल से ही महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। महिलाओं के बिना सब कुछ व्यर्थ है। संसार की उत्पत्ति भी इनके बिना संभव है। प्राचीन काल में महिलाओं के बारे में मनुस्मृति में मनु ने कहा है कि जहाँ महिलाओं को सम्मान मिलता है वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही महिलाएँ प्रत्येक कार्य में पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चली है; भारत को स्वतंत्र करवाने में भी उन महिलाओं का विशेष योगदान रहा है। गाँधी जी के आंदोलन में इन महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है, भारत की आजादी में महिलाओं की भूमिका का अपना इतिहास रहा है, महिलाओं ने हर क्षेत्र में आगे आकर भूमिका निभाई है, गाँधी जी जानते थे कि राष्ट्रीय आंदोलन को सच्चे अर्थो में जनांदोलन बनाने के लिए उसमें महिलाओं की व्यापक भागीदारी बहुत आवश्यक है। गाँधी जी ने आदर्श भारतीय नारी की अवधारणा प्रस्तुत किया और महिलाओं को राष्ट्र की सेवा में लग जाते और अपने देश के लिए बलिदान देने का आह्वान किया। उन्होंने स्त्री–पुरूष के बीच 'स्वाभाविक श्रम–विभाजन' पर जोर दिया और द्रोपदी, सीता और सावित्री को महिलाओं का आदर्श बताया। उन्होंने महिलाओं को यह विश्वास दिलाया कि उनके बिना आंदोलन नहीं चल सकते, उन्होंने एक बार कहा था कि महिलाएँ गृह निर्माता है और पोषक है तथा भारत के पुनरूत्थान में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्रस्तावना :–

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का वास्तविक प्रारंभ 1857 की महान क्रांति से ही माना जाता है। 1857 की प्रथम क्रांति से लेकर 1947 तक भारत के आजाद होने तक कई विद्रोह हुए जिनमें महिलाओं ने काफी सहयोग दिया। महिलाओं की स्वतंत्रता संघर्ष में उचित भागीदारी महात्मा गाँधी के आंदोलनों के परिणामस्वरूप हुई, महात्मा गाँधी का मानना था कि भारत की आधी आबादी महिलाएँ है और इनके बिना कोई भी आंदोलन सफल नहीं हो सकता। गाँधी जी महिलाओं के सक्रिय सहयोग के पक्षधर थे। गाँधी जी ने कहा था कि हमारी माँ–बहनों के योगदान के बगैर यह संघर्ष असंभव था। इस बात का इतिहास साक्षी है कि कट्टर रूढ़िवादी हिन्दू समाज में इसके इतने बड़े पैमाने पर महिलाएँ सड़को पर कभी नहीं उतरी जितनी महात्मा गाँधी के आंदोलन में आई। वे महिलाओं को यह कह कर प्रेरित करते थे कि देवियों और वीरांगनाओं की तरह आंदोलनों में उनकी अपनी एक विशेष भूमिका है और उनमें इस भूमिका को निभाने की शक्ति और हिम्मत भी

है। कई विद्वानों इतिहासकारों एवे नारीवादियों यथा उमा चक्रवर्ती एवं कुमकुम राय ने भारतीय इतिहास के लेखन में महिलाओं की भागीदारी को कम करके आंकने की बात कही है, जबकि वास्तव में राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी संघर्ष के भीतर संघर्ष था, क्योंकि राष्ट्रीय आंदोलन के साथी स्त्रियों ने अपनी मुक्ति का भी सवाल जोड़ दिया था। जबकि महिलाएँ संगठक, नेता, संदेशवाहक आदि विभिन्न रूपों में कुशलता से काम कर रही थी, 1917 ई0 में भारतीय महिलाओं का एक प्रतिनिधि स्त्रियों के मताधिकार की मांग के संबंध में मांटेग्य से मिला था। तब अंग्रेज महिलाओं को भी यह अधिकार प्राप्त नहीं थे। उन्हें यह अधिकार 1928 ई0 में प्राप्त हुआ। गाँधीजी ने 1940 ई0 में स्वीकार किया था कि उन्होंने रचनात्मक कार्यक्रम में स्त्रियों की सेवाओं को जोड़ा था, यद्यपि सत्याग्रह में भागीदारी के द्वारा स्वाभाविक रूप से भारतीय स्त्रियां अंधकार से बाहर आयी, उतने थोड़े समय में और किसी अन्य माध्यम से यह संभव नहीं था, किन्तु कांग्रेस में पुरूष स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में स्त्रियों को समान स्तर पर नहीं देख पा रहे थे, अपने को स्वामी और लाई ही समझते थे। स्त्रियों को मित्र अथवा साथियों के रूप में स्वीकार नहीं करते थे। स्त्रियों को कानून तोड़ने की प्रक्रिया के लिए चुना जाता था।

उल्लेखनीय है कि 1936–37 ई0 में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति में किसी महिला को सदस्य नहीं बनाया गया था। 1921 ई0 में गाँधीजी के सुझाव पर बम्बई में राष्ट्रीय सेविका संघ तथा देश सेविका संघ का गठन महिलाओं ने किया था जो विदेशी सामानों के बहिष्कार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी। महिलाओं की भूमिका सिर्फ इन्हीं आंदोलनों तक ही सामित नहीं रही, क्रांतिकारी आंदोलनों में भी इनकी भागीदारी उल्लेखनीय है, कल्पना दा, प्रीति लता वांडेकर एवं सुनीति चौधरी आदि नाम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है।

असहयोग आंदोलन :–

सन् 1920–22 में जब असहयोग आरंभ हुआ तो पहली बार महिलाएँ भारी संख्या में आंदोलन से जुड़ी, सैंकड़ो महिलाएँ खादी और चरखे बेचने गली–गली गई, उन्होंने खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए जुलूस निकाले और समूहों में विदेशी कपड़ों की होली जलाई। 1921 में कांग्रेस सम्मेलन में 144 महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया, इसमें 131 महिला स्वैच्छिक कार्यकर्त्ता और 14 विभिन्न समितियों में थी, कांग्रेस की कार्यकारिणी में महिलाओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही थी। कस्तूरबा गाँधी, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, अरूणा आसफ अली आदि रही है, इन महिलाओं ने कई बार कांग्रेस का उचित मार्गदर्शन किया, मुम्बई में महिलाओं ने राष्ट्रीय स्त्रीसभा का गठन किया। यह प्रथम महिला संगठन था जो बिना पुरूषों के चलाया जाता था। राष्ट्रीय स्त्री सभा की सदस्यें पूरे बम्बई में खादी प्रचार में लगी थी। इस आंदोलन में न केवल समृद्ध घरों की महिलाएँ आगे आई बल्कि इस आंदोलन में श्रमिक वर्ग तथा निम्न वर्ग की महिलाओं ने भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया। महिलाओं के इन आंदोलनों में भाग लेने का ही परिणाम रहा कि समय–समय पर इनके अधिकारों से संबंधित नियम भी बनते रहे तथा उन्हें पारम्परिक कार्यो के अलावा फैक्ट्रियों आदि में कार्य करने की अनुमति प्रदान की गई तथा उन फैक्ट्रियों में उन्हें मूलभूत सुविधाएँ भी प्रदान की गई।

सविनय अवज्ञ आंदोलन :–

1930 में प्रारंभ हुए इस आंदोलन में महिलाओं ने अपनी भागीदारी और भी अधिक प्रबल ढंग से सुनिश्चित की। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन अहमदाबाद से डांडी तक 240 मील की डांडी यात्रा से आरंभ हुआ। यह आंदोलन अंग्रेजों के नमक कानून तोड़ने उनके नमक बनाने के एकाधिकार को चुनौती देने के लिए चलाया गया। इस आंदोलन में गाँधी जी को लगा कि डांडी यात्रा अत्यधिक कठिन कार्य है जो कि महिलाओं के लिए कर पाना मुश्किल प्रतीत हुआ, लेकिन महिलाओं ने उनकी इस सोच को बदला और पूरे डांडी यात्रा के दौरान जहाँ–तहाँ भी उन्होंने समाएँ की वहाँ सर्वाधिक संख्या में महिलाएँ उपस्थित रही। हजारों महिलाओं ने नमक सत्याग्रह आंदोलन में नमक बनाने से लेकर उसके विक्रय का भी कार्य किया। इस नमक सत्याग्रह में कुल 80 हजार जेल भेजे वाले लोगों में 17 हजार महिलाएँ थी। इस आंदोलन में महिलाओं के अधिक संख्या में भागीदारी की पृष्ठभूमि 1920–30 के मध्य तैयार हो चुकी थी। क्योंकि इस दौरान कई महिला संगठन अस्तित्व में आ चुके थे। इन सभी ने महिलाओं को लाभबंदी, जुलूस व प्रभात फेरी निकालने, धरने आदि आयोजित करने के काम के साथ–साथ खादी के प्रचार–प्रसार, चरखा चलाने का प्रशिक्षण और खादी बेचने आदि के काम भी किए, जैसे–जैसे आंदोलन ने जोर पकड़ा और उसमें महिलाओं की भागीदारी बढ़ी महिलाओं के मुद्दे भी चर्चा में आये। महिलाओं की लाभबंदी करने और उनके मुद्दे उठाने में सबसे ज्यादा सक्रिय संगठन ऑल इंडिया वूमेन्स कान्फ्रेंस ;।ण्ॅण्ब्द्ध था जिसकी स्थापना कांग्रेस ने 1928 में महिलाओं की आंदोलन में बढ़ती भागीदारी को देखकर की थी।

भारत छोड़ो आंदोलन :–

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में हजारों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। इस दौरान महिलाएँ क्रांतिकारी पुरूषों के सहयोग के लिए भी तैयार थी तथा उनके गैरकानूनी कार्यो में भी भागीदार बन रही थी। महिलाओं को आत्मरक्षा के कई प्रशिक्षण भी दिए गए ताकि वे अपनी रक्षा स्वयं कर सके। इसी साल में महिलाओं के आत्मरक्षा की कई समितियां भी बनी जहाँ उन्हें लाठी चलाने का प्रशिक्षण भी दिया गया। पटना, हुगली, बाली, त्रिपुरा आदि स्थानों पर महिलाओं ने प्रभातफेरिया निकालकर तथा पोस्टर प्रदर्शनियाँ लगायी। 1940 के दशक मे महिला आंदोलन पूरी तरह स्वाधीनता आंदोलन में समाहित हो गया। 1857 की महान क्रांति में झाँसी तथा लखनऊ जैसे क्षेत्रों का नेतृत्व रानी लक्ष्मीबाई तथा बेगम हजरत महल ने किया। यह भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय नेतृत्व का प्रारंभ था। इसके बाद तो जैसे–जैसे राष्ट्रीय आंदोलन परवाने चढ़ता गया। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गाँधी, एनी बेसेंट आदि न जाने कितने नाम के जो भारतीय महिलाओं की प्रेरणास्रोत बने। गाँधी जी ने महिलाओं के आत्मत्यागी एवं बलिदानी स्वभाव के हिमायती थे। गाँधी जी की सोच थी कि गर्भधारण और मातृत्व के अनुभव से गुजरने के कारण महिलाएँ शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने के लिए ज्यादा उपयुक्त है। गाँधी जी स्वयं अपने को दक्षिण अफ्रीकी सत्याग्रही महिलाओं से प्रभावित होने की बात स्वीकारते है गाँधी जी ने 1921 में

एक बार कहा था कि "पुरूषो की नजरों में महिलाएँ कमजोर नहीं है वरन दोनों लिंगो में ज्यादा श्रेष्ठ इसलिए है कि आज भी वे त्याग, खामोश, पीड़ा, विश्वास और ज्ञान की साक्षात् प्रतिमा हैं।"

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाएँ :–

वास्तव में स्वतंत्रता पूर्व महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता का प्रारंभ राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के प्रयासों से संभव हुई। महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी के लिए महिलाओं को प्रोत्साहित किया। वे स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के महत्व को अच्छी तरह से समझ चुके थे। उनका विचार से असहयोग आंदोलन में महिलाएँ पुरूषों की तुलना में अधिक लाभकारी है। क्योंकि उनमें धार्मिकता की भावना तुलनात्मक रूप से अधिक होती है। चुपचाप शांत होकर के आपसी सेवा में आगे बढ़ती रहती है। जब वे सही मन से किसी काम को करें तो वे पहाड़ो तक चढ़ सकती है।

यद्यपि ब्रिटिश काल के शुरू के दौर में महिलाओं की राजनैतिक क्षेत्र में भागीदारी बहुत ही कम थी। महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन के समय से उनकी भागीदारी काफी बढ़ी क्योंकि उन्होंने महिलाओं की भागीदारी हेतु जोर–शोर से आह्वान किया। उन्होंने स्त्रियों को पर्दा से बाहर निकाल कर उनका सामाजिक आर्थिक – राजनैतिक रूपान्तरण किया। 1921 ई0 के असहयोग आंदोलन एवं 1430 ई0 के नागरिक, अवज्ञा आंदोलन एवं नई तकनीकि जैसे– विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, शराब दुकानों का बहिष्कार, सरकारी कार्यों में असहयोग आदि को अपनाया गया। महात्मा गाँधी को महिलाओं की आंतरिक क्षमताओं एवं उनके नैतिक स्तर पर पूर्ण विश्वास था, कई अहिंसात्मक आंदोलनों में केवल उच्च जाति एवं वर्ग की महिलाओं बल्कि ग्रामीण एवं अशिक्षित महिलाओं ने भी नेतृत्व करने का कार्य किया। महिलाओं ने स्वयं को संगठित करने का कार्य किया तथा प्रदर्शनों में भाग लेने के साथ–साथ पुलिस की गोलियों का भी सामना किया और जेल भी गई। महाराष्ट्र की पंडिता रमाबाई आनन्दी बाई जोशी, रमाबाई रानाडे, दक्षिण की सरोजिनी नायडू, उत्तर की विजया लक्ष्मी पंडित, अरूणा असफ अली, लक्ष्मी सहगल, कमला देवी चट्टोयाध्याय आदि ने शुरू में स्त्रियों की शिक्षा, मातृत्व कल्याण, विधवा पुनर्विवाह, बाल–विवाह विरोध पर्दा प्रथा विरोध तक ही अपने को सीमित रखा था। किन्तु असहयोग आंदोलन के समय से वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हो गई। सरोजिनी नायडू ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष पद भी प्राप्त किया। स्वतंत्रता आंदोलन ने दो तरह एक अभिजात्य तथा दूसरा सामान्य वर्ग की महिलाओं को एक साथ राजनीति के क्षेत्र में लाने का कार्य किया। इस आंदोलन में दोनों वर्ग की महिलाओं की भागीदारी साथ–साथ थी। गाँधीजी ने राष्ट्रीय क्रियाकलापों विशेष रूप से रचनात्मक कार्यक्रमों एवं अहिंसक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए महिलाओं को प्रोत्साहित किया क्योंकि उनके लिए राष्ट्रीय आंदोलन केवल एक राजनीतिक संघर्ष नहीं था। बल्कि यह समाज के पुननिर्माण एवं पुर्नउत्थान का एक महत्वपूर्ण साधन था। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक समाज के सभी वर्गो की महिलाएँ राजनीतिक के क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लेनी लगी। महिलाओं के

राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी करने के परिणामस्वरूप उनमें आत्मविश्वास एवं आत्म सम्मान की वृद्धि हुई एवं उनके जीवन में सार्वजनिक तथा निजी जीवन के विभेद टूटने लगे।

1857 का विद्रोह :–

भारत को स्वतंत्र कराने का जो अभियान था वह यद्यपि गाँधीजी के राजनीति में आगमन के बाद व्यापक स्तर पर शुरू हुआ। परंतु देश को स्वतंत्र कराने का अभियान बहुत पहले ही शुरू हो चुका था। 1857 के विद्रोह ने ब्रिटिश सत्ता का अंत करने के प्रयास को लेकर सर्वप्रथम शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दी। 1857 के संग्राम का शुभारंभ सर्वप्रथम सैनिक छावनियों से हुआ। जवान मंगल पांडे द्वारा अपने सार्जेट पर गोली चलाने के साथ ही क्रांति का बिगुल बज उठा, देखते ही देखते यह स्वतंत्रता संग्राम कानपुर, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, बरेली, जगदीशपुर और झाँसी आदि जगह पर फैल गया तथा नाना साहब, तात्या टोपे, महारानी लक्ष्मीबार्द, मौलवी अहमदाबाद, कुंवर सिंह जैसे अनेक नेता इस संग्राम से जुड़ गए स्वतंत्रता संग्राम में जहां वीर योद्धाओं ने अपनी जान दाँव पर लगाई वही हमारी वीरांगनाओं ने भी अंग्रेजो का डटकर मुकाबला किया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई बेगम हजरत महल, अवन्ती बाई लोदी, टेस बाई और अजीजन जैसी अनेक वीरांगनाओं ने युद्ध में अंग्रेजो के सम्मुख अपना लोहा मनवाया।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई :–

हमारे यहाँ युद्ध में अनेक देवियों ने शत्रुओं के दाँत खट्टे किए है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक वीरांगनाओं ने देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया। देश के लिए प्राणों को उत्सर्ग करने वाली वीरांगनाओं में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम अग्रण्य है। जिन नारियों ने भारत माता के गौख को ऊँचा किया है, उनमें महारानी लक्ष्मीबाई महान थी। यही वह महिला थी, जिसने भारत की स्वतंत्रता की मशाल लेकर भारत की स्वाधीनता के लिए हँसते–हँसते अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। उनका शौर्य, साहस और बलिदान हमेशा भारतीय महिलाओं को वीरता की प्रेरणा देता रहेगा। हिन्दी के अनेक कवियों ने रानी की वीरता का गुणगान किया है।

बेगम हजरत महल :–

10 गई 1857 को मेरठ में विद्रोह के आरंभ होने के बाद 30 मई 1857 को अवध के विद्राह की घोषणा की गई, 4 अंग्रेजो के विरूद्ध इस विद्रोह की नेता अवध के नवाब वाजिद अली शाह की बेगम् हजरत महल थी। बेगम हजरत महल एक नर्तकी थी। अपने सौन्दर्य वे गुणों के कारण वे अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह की बेगम बन गई सुन्दरता के साथ–साथ हजरत महल में प्रशासनिक योग्यता कूट–कूट कर भरी हुई थी। उनका व्यक्तित्व आकर्षक और मोहक था। मई, 1857 के अंत में अवध में विद्रोह को भड़काने में बेगम हजरत महल ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। शीघ्र ही विद्रोह की चिंगारी अवध के अन्य प्रदेशों में भी फैल गई जून 1857 के अंत तक लखनऊ की रेजीडेंसी जहाँ अंग्रेजों ने शरण ली थी। शहर के अन्य भागों पर विद्रोहियों का अधिकार हो चुका था।

आजीवन बेगम :–

जब कानपुर में क्रांति कह अग्नि प्रज्वलित हुई तो कानपुर की वीरांगना अजीवन का प्रशंसनीय योगदान था, आजीवन बेगम अपने समय की प्रसिद्ध नर्तकी थी, कानपुर में क्रांति के शुरू होने पर आजीवन ने वीर–साहसी और निर्भय महिलाओं की एक टुकड़ी तैयार की उस महिला सैनिक दल की वीरांगनाएँ पुरूष वेश में घोड़ो पर सवार हाथ में नंगी तलवार लेकर निकल पड़ी। वे पुरूषों को स्वाधीनता संग्राम में सम्मिलित होने के लिए कहती, वे घायलों की सेवा करती तथा युद्धरत सैनिकों को दूध, मिठाई और फल बाँटती, जब आवश्यकता पड़ती तो रणभूमि में संकट तथा गोली वर्षा की परवाह न कर युद्धरत सैनिकों को कारतूस पहुँचाती। यह सब वीरांगना आजीवन की प्रेरणा तथा नेतृत्व का चमत्कार था कि पर्दे में रहने वाली स्त्रियां रणभूमि में थी।

एनी बेसेंट और होमरूल आंदोलन :–

देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए न केवल भारतीय नेताओं ने अपनी जान की बाजी लगाई बल्कि अनेक विदेशी नागरिकों ने भी भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना योगदान दिया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एनी बेसेंट और उनके होमरूल आंदोलन का विशेष योगदान रहा। एनी बेसेंट का जन्म अक्टुबर 1847 में लंदन में हुआ था। 1893 में एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसाईटी के आमंत्रण पर भारत पहुँची। एनी बेसेंट हिन्दू धर्म से बहुत प्रभावित थी। उन्होंने हिन्दू धर्म, दर्शन और संस्कृति के अध्ययन के साथ–साथ से देखा। एनी बेसेंट ने भारतीयों को अपनी मान्यताओं के प्रति सम्मान करना सिखाया।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय :–

नमक सत्याग्रह तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन से ही राजनीति में सक्रिय रहीं थी। उसके बाद लगातार स्वतंत्रता संघर्ष के लिए होने वाले आंदोलनों में भागीदारी देती रही। अपने राजनीतिक संघर्ष के दौरान उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, उन्हें भी गिरफ्तार किया गया। जेल से छूटने के बाद वो अमेरिका गई तथा वहाँ के लोगों को भारत में ब्रिटिश हुकुमत की सच्चाई के बारे में बताया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने अपना समय भारत की कला, संस्कृति तथा दस्ताकारी के उत्थान में लगाया। वह सहकारी संगठनों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य अकादमी संगीत नाटक अकादमी तथा भारतीय दस्ताकारी परिषद् की स्थापना में अपना योगदान दिया। वर्ष 1955 में कला के क्षेत्र में योगदान के लिए उन्हें पदम् भूषण से सम्मानित किया गया।

मीराबेन :–

इनका वास्तविक नाम मेडलिन स्लेड था तथा वो ब्रिटेन के एक कुलीन परिवार से संबंधित थी। मेडलिन ब्रिटिश नेवी ऑफिसर एडमंड स्लेड की बेटी थी, अपने फ्रांस प्रवास के दौरान जब वो फ्रेंच लेखक रोमन रोलैंड से मिली और महात्मा गाँधी पर लिखी गई उनकी पुस्तक से वह अत्यंत प्रभावित हुई। तभी उन्होंने भारत आने का निश्चय किया। वर्ष 1925 में वह भारत पहुँची और साबरमती आश्रम में रहने लगी। गाँधीजी ने उन्हें अपनी बेटी

माना और मीराबेन नाम दिया। तब से वह गाँधीजी को सहयोगी के रूप में हमेशा उनके साथ रहने लगी। वर्ष 1931 में वह गाँधीजी के साथ दूसरे गोलमेज सम्मेलन में लंदन गयी थी। वह गाँधीजी के विचारों को इंगलैंड, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी तथा स्वीटजरलैंड में स्थित समाचार पत्रों को भेजती थी। सरकार ने उन्हें ऐसा करने से रोका लेकिन वो ऐसा करती रही। भारत छोड़ा आंदोलन के दौरान मीराबेन को भी गाँधीजी के साथ गिरफ्तार किया गया था और उन्हें आगा खाँ महल में भेज दिया गया जहाँ वो 21 महीने तक रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वो उत्तर प्रदेश सरकार की 'ग्रे मोर फूड' अभियान की सलाहकार रही। उन्होंने ऋषिकेष में एक आश्रम की स्थापना की तथा जीवन के अंतिम समय तक वे वही रही। इस तरह मीराबेन ने अपना पूर्ण जीवन भारत की सेवा में अर्पित किया तथा गाँधीजी के संदेशों का प्रचार करती रही।

ऊषा मेहता :–

भारत छोड़े आंदोलन के प्रारंभ होने के बाद जब सभी मुख्य कांग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिए गए तब जिन लोगों ने गुप्त तरीके से आंदोलन को चलाया उनमें से ऊषा मेहता प्रमुखी नाम है। कांग्रेस रेडियो के माध्यम से ऊषा मेहता ने भारत छोड़ो आंदोलन में अभूतपूर्व भूमिका निभाई। कांग्रेस के कुछ सदस्यों ने मिलकर भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान होने वाली सभी घटनाओं को जनता तक कांग्रेस रेडियो के माध्यम से पहुंचाया। इन सदस्यों में ऊषा मेहता के अलावा विटुलदास, चंद्रकांत झावेरी, बाबुभाई ठक्कर और शिकागो रेडियो थे। इस रेडियो का प्रसारण मुंबई में विभिन्न स्थानों पर छिपाकर किया जाता था तथा प्रत्येक अगले दिन का प्रसारण किसी दूसरे स्थान से होता था।

सुचेता कृपलानीः–

इनका राजनीतिक जीवन तब प्रारंभ होता है जब वह काशी हिंदू विश्वविद्यालय में इतिहास की लेक्चरर थी। वर्ष 1936 में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आचार्य जे0बी0 कृपलानी से उनका विवाह हुआ। उसके बाद वो सक्रिय राजनीति में भाग लेने लगी और अपनी लेक्चरर की नौकरी छोड़ दी। उन्होंने आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में व्यक्तिगत सत्याग्रह में हिस्सा लिया और जेल गई। जेल से निकलने के बाद वो भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वो भूमिगत होकर प्रचार–प्रसार करती रही। इस कार्य के दौरान उन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा, किंतु वह पुलिस से बचकर निकलती रही। वर्ष 1943 में जब कांग्रेस के प्रचार तथा उसमें लोगों को जोड़ने के लिए लगातार प्रयास किये। भारत विभाजन के समय वो गाँधीजी के साथ मिलकर दंगे से प्रभावित क्षेत्रों में जा रही थी। वह उत्तर प्रदेश की विधानसभा में सदस्य तथा बाद में लोकसभा की सदस्य भी रही। वर्ष 1963 में वह उत्तर प्रदेश को मुख्यमंत्री बनी और वह भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री थी।

निष्कर्ष :–

स्वतंत्र भारत में संवैधानिक व्यवस्था के तहत् महिलाओं को प्रदत्त अधिकारों एवं महिला हितों के लिए बनाये गए विभिन्न अधिनियमों ने महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के लिए कई मार्गो को एक साथ खोलने का काम किया। भारतीय समाज में ऐतिहासिक रूप से महिलाओं की सामाजिक परिस्थिति में समय–समय पर परिवर्त्तन होते

रहे है उनकी स्थिति में परिवर्त्तन की घटनाएँ हमें वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक में दृष्टिगोचर होती है। हर काल एवं परिस्थिति के संदर्भ में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता की स्थिति अलग–अलग देखी जा सकती है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार की तीन दिशाएँ रही। प्रथम, सामाजिक सुधार हेतु कई प्रयास किये गये इनमें सुधार आंदोलन एवं राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण घटना रही है। दूसरे स्तर पर महिलाओं की शिक्षा की स्थिति में सुधार हेतु उन्हें अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास हुआ। तीसरा प्रयास स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् संवैधानिक व्यवस्था के तहत् महिला हितों में बनाए गए कई कानून है। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी भी महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। वास्तव में स्वतंत्र भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता की पृष्ठभूमि इसी आंदोलन में तैयार हुई।

संदर्भ सूची :–

1. एस0एस0 माथुर एवं ए0 माथुर, सोसियो–साई के लॉजिकल डायमेंसनस ऑफ वीमेन एडकेशन ज्ञान पॉलिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2001
2. महात्मा गाँधी, दी हरिजन, 22 दिसम्बर 1921
3. सुभाष शर्मा, भारतीय महिलाएँ दशा एवं दिशा शताब्दी प्रकाशन, पटना, 2000
4. कुमकुम सोगरी एवं सुदेश वेद, रिकास्टिंग वीमेन : एसेज इन कॉलोनियल हिस्ट्री, सं0 काली और वीमेन, नई दिल्ली, 1998
5. हेमलता स्वरूप, इथेनसिटी जेंडर एण्ड क्लास, इन्टर नेशनल कांफ्रेंस ऑफ हिस्ट्री रिजनस ऑफ दी लेवर मुवमेंट, यूरोपा वर लेग, विचाना 1993
6. एस0आर0 बख्शी, एडवांसड हिस्ट्री ऑफ मॉर्डन इंडिया (सं0) खं0– 3–4, अनमोल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1995
7. हेमलता स्वरूप, पूर्वोल्लिचित, पृ0 367
8. महात्मा गाँधी, ग्राम स्वरात्य, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1936
9. कांग्रेस का इतिहास खण्ड डॉ0 बी पटामिसीता रमैया
10. भाई एक्सपीरियंष विद दरन्थ बाई महात्मा गाँधी
11. उषा बाला : भारत की वीरांगनाएँ, प्रतिसूप्रम भारत सरकार, 2006
12. डॉ0 अवनीन्द्र कुमार : स्टडीज ऑफ द हिस्ट्री ऑफ मॉर्डन बिहारख पटना, 2008
13. रात्नेष प्रसाद सिंह, बलिपंथी, जिला स्वतंत्रता सेनानी संघ, समस्तीपुर, 1946